7.8

यह है ज्ञान मार्ग। दुनियाँ मे है सब भक्ति मार्ग। रावण की गवर्मेन्ट है ये भक्ति की। भक्ति माना दुर्गति।
तुम यहाँ से जाकर सुनो सब भक्ति ही भक्ति है। ज्ञान सुनाने वाला ज्ञान का सागर बाप एक ही है। पतित
पावन भी वो ही है। अब यह किसीको पता नही है। इसमे बड़ी मुश्किल बात यह है कि सारी देह के
सम्बन्धियों को भुलना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। और सबकी याद छोड़नी है।
बाप को याद करने का पुरुषार्थ करना है। गुप्त मेहनत ही यह है। एक को याद करना है। कामकाज
करते फिरते तुम्हारे बुधी मे यह है कि अब यह विनाश होगा है। अकेले आये थे अकेले जाना है।
अन्त समय बाप को जो सिमरे ऐसे चिन्तन मे जो मरे... वो मुक्ति जीवन मुक्ति पावे। बच्चे जानते है अब
नाटक पुरा होता है सबको घर जाना है। विनाश के बाद फिर यही राजधानी होगी। इसमे याद की
मेहनत बहुत है। बुधी मे है कि यह सभी पति धारी मरे पड़े है। उनसे अब क्या दिल लगानी है।
सन्यासियों को गीता उठाने का हुक्म नही है। गीता है सब शास्त्रों का माई बाप। बाकी है रचना। उनसे
तो वर्सा मिलना नही है। गीता भी है झुठी। भक्ति मार्ग मे कोई भी मुक्ति जीवन मुक्ति दे नही सकते है।
तुमसे अब भक्ति होती नही। यह तो हम बन रहे है। पुजारी से पुज्य बन रहे है। यह है सच्ची कमाई
जो ही साथ ले जानी है। जिनती-2 धारना करेंगे। हम आत्माये पहले सतोप्रधान थी। फिर रजो तमो मे
आते आये है। कोई नई आत्मा आती है तो इतनी ताकत नही होती। बस आये और यह लो गये। एक दो
जन्म का पार्ट है। अब बाप कहते है पुरानी दुनिया से वैराग चाहिये। जितना बेहद के बाप को याद
करेंगे उतना ही खाद निकलती जायेगी। इस मृत्यु लोक मे तुम्हारा अन्तिम जन्म है। मै आया ही हूं अमर
कथा सुनाने। अब अमर पुरी मे चलना है। अमरपुरी शान्तिधाम को नही कहेंगे। वहाँ तो सब आत्माये रहती
है। निराकारी दुनियाँ है ना। फिर लीन होने की बात तो नही होती। वो है भक्ति मार्ग की बातें। ज्ञान तो
सिर्फ तुम संगम युगी ब्राह्मण पाते हो। यज्ञ सदैव ब्राह्मण ही रचते है। बेहद के बाप शिव के यज्ञ मे
कोई विकारी ब्राह्मण हो ना सके। इन्द्र की सभा मे कोई विकारी आया तो पिण्ड पेड़ हो गया। यहाँ विकारी
को तो अन्दर बैठना ही नही है। यह ईश्वरीय सभा है। इसमे छिप कर बैठेंगे तो और ही धोखा खावेंगे।
पत्थर बुधी बन जावेंगे। बोलो यह प्रदर्शनी आदसभी ज्ञान से तास्सुक रखती है ना कि भक्ति से। कान में
तो पुरा मन्त्र दो। शिव बाबा कहते है कि मै पतित पावन आया हुआ हूं तुमको पावन बनाने। अब पवित्र
बनना है। दैवी गुण धारन करने है। विकारो को छोड़ना है। तुम शुद्ध थे तो राहू का ग्रहण था। अब फिर
ब्रहस्पत की दशा बैठी है। इस दशा मे भी नीचे ऊपर होते है। कोई को शुक्र की दशा कोई को राहू की
दशा कोई को क्या दशा आ जाती है। मनुष्य मात्र सब याद करते है हे पतित पावन आओ। तो कोई
भी पावन नही है ना। बाप भी कहते है साधु जिनका नाम है उनका भी मै उधार करता हूं। तो जो दुर्गति
को पाये हुये किसीकी सदगति कैसे कर सकते है? परन्तु अहंकार बहुत है ना। कुड़-कुड़ करने लग पड़ते है।
बाप कहते है यह शास्त्र आद सब भक्तिमार्ग का भुसा है। ऐसे बहुत आते है समझते है कि कृष्ण
भगवान नही। शिव भगवान है। खुद कहते है कि हम जाकर आपने फालोवर्स को कहेंगे। परन्तु भक्त तो
शिव भगवानोवाच्यु मानेंगे नही। कहेंगे इनकी मत मारी गई है। इतनी बादशाही छोड़ कर वो यहाँ थोड़ेई
रहेंगे। यहाँ तो फिर कहेंगे जोवना कि झाड़ु लगाओ यह करो वो करो। वहा तो बड़े आराम से रहते है खाते
पीते है। कितने ढेर सन्यासी साधु भारत मे है। कितने ढेर सन्यासी साधु भारत मे है। उनकी भारत पर कृपा
ही क्या है। कृपा तो बाप करते है ना। ड्रामा के अन्दर पार्ट है। बाप कहते है मेरा पार्ट है ड्रामा के अन्दर
कि तुम बच्चो को फिर से स्वर्ग का मालिक बनाना। अब यह तो बुधी मे है ना। पूरो फिरो परन्तु बुधी
मे यही रखो कि हमको अब वापस जाना है। योग बल से ही पाप भस्म होंगे। तुम पवित्र बन जावेंगे।
प्योरटी तो अच्छी है ना। भारत मे ही प्योरटी पीस परासपैरटी सभी है। गुड़ नाईट